1 Chapter- संचार कौशल (1)

Communication skills

DATE PAGE

* संचार ⇒

संचार का तात्पर्य किसी भाव, विचार जानकारी अथवा सूचना को दूसरो तक पहुँचाना ही संचार कहलाता है

संचार शब्द को अंग्रेजी शब्द मे Communication कहते है Communication शब्द की उत्पत्ति letting भाषा के communis शब्द से हुई है)

Ex. जब एक शिक्षक अपने विचारो को छात्रो तक पहुँचाने के लिए leacture का सहारा करते है

संचार की निम्नलिखित विशेषताएँ है

i. संचार आपसी समझ का एक नियम है

ii. संचार वह प्रक्रिया है जो समानता को बनाती है

iii. संचार वह बल है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अन्य व्यक्तियो के व्यवहार में परिवर्तन करने की उद्देश्य से सूचनाओ का स्थानान्तरण करता है

* गतिशीलता ⇒

संचार मे हमेशा गतिशीलता पाई जाती है क्योंकि इसमे प्रेषित तथा प्राप्त होने वाले संदेशो का स्वरूप एवं अर्थ परिवर्तन शील होता है प्रत्येक विशेष के अनुसार संदेशो के अर्थ मे परिवर्तन शील होता है

Ex ⇒ सरकारी दफ्तरो मे कार्यरत कर्मचारी स्कूलो मे छात्र

* जटिलता ⇒

संसार को संचार की प्रक्रिया को

प्रभावित करने वाले अनेक कारक तथा तत्व है जैसे- प्रसन्नता, दो व्यक्तित्व

* क्रम बद्धता =>

संचार की प्रक्रिया या विशेषता जिसके अन्तर्गत व्यक्तियो के बीच आदान-प्रदान होने वाले चार एक-दूसरे पर आश्रित एवं होते है

जैसे => छोटे बच्चो के द्वारा बोलने हेतु किया गया प्रयास

* कारण और प्रभाव =>

संचार की प्रक्रिया मे कारण तथा प्रभाव घटते है जैसे वाक्य कारण पर ही ध्यान न लगना, या कहीं और उड़ जाना

* संचार की आवश्यकताएं =>

संकेत द्वारा एक अभिव्यक्ति को या सामने वाले व्यक्ति मे संकेतो तथा व्यवहार के माध्यम से अन्य लोगो के साथ अपने विचारो का आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया का रूप बदलाव संचार के माध्यम से हमारे जीवन मे शामिल होता है चाहे वो अकेला हो, चाहे वो समूह में,

हम दूसरो की प्रत्यक्ष रूप से बातो को उतना बोलना या अकेले होने पर भी कुछ न कुछ सोचते रहना या भी संचार का माध्यम है लोग अपने व्यक्तित्व अथवा कार्य की आवश्यकताओ की संतुष्टि के लिए संचार का उपयोग करते है लोगो मे खुद के बारे मे उन्हे जाने की

या खुद का सम्मान किये जाने की व अन्य लोगों द्वारा खुद को स्वीकृत करने की तीव्र इच्छा होती है यह भी एक संचार है

संचार के प्रमुख कार्य ⇒

विचारों भावनाओं इच्छाओं या कौशल (skills) आदि का पारस्परिक आदान-प्रदान होता रहे इस प्रक्रिया के माध्यम से संचार होता है

I. संचार प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति स्वयं अपनी भावनाओं, विचारों आदि के बारे में जानने तथा स्वयं के बारे में दूसरों के विचारों आदि का पता लगाने का प्रयास करता है

II. स्वयं के विषय में दूसरों की प्रतिक्रियाओं को जानकर व्यक्ति दूसरे के साथ संचार स्थापित करके अपनी पहचान करने का प्रयास करता है जिससे उसे अपनी आत्म छवि पर (चिन्तन) करने का अवसर होता है

संचार के प्रकार ⇒

संचार मुख्यतः तीन प्रकार का होता है

(i) मौखिक संचार (ii) लिखित संचार (iii) अमौखिक संचार

(i) मौखिक संचार ⇒

मौखिक संचार का तात्पर्य ऐसे संचार से है जिसमें सामान्यतः बोलकर संदेश का सम्प्रेषण किया जाता है यह संचार का एक सामान्य प्रकार है जिसका प्रयोग हम काफी लम्बे समय से करते आ रहे हैं मौखिक संचार का प्रयोग सामान्यतः सभाओं में गोष्ठियों में टेलीफोन पर बातचीत तथा भाषणों आदि की प्रस्तुति में किया जाता है

Scanned with AltaScanner

(ii) लिखित संचार =>

लिखित संचार का आज के समय में अत्यधिक महत्व है व्यापारिक विकास हेतु, विज्ञापन सामग्री तैयारी करने हेतु तथा अन्य संस्थाओं से संचार हेतु यह अनिवार्य है लिखित संचार में लिखे गये सन्देश में साधारण एवं सरल भाषा का प्रयोग किया जाता है इसके प्रमुख रूप है

i) ई-मेल द्वारा =>

यह संचार का आधुनिक रूप है जिसमें कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट की सहायता से सन्देश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर अन्य माध्यमों की तुलना में तीव्रता से भेजा सकता है

ii) पत्रों द्वारा =>

यह अत्यन्त प्राचीन विधि है इसमें सन्देश भेजने वाला व्यक्ति पत्र द्वारा अपना सन्देश भेजता है सन्देश प्राप्त करने वाला व्यक्ति अपना उत्तर या प्रतिक्रिया एक अन्य पत्र द्वारा भेजता है

3- अमौखिक संचार =>

अमौखिक संचार का तात्पर्य ऐसे संचार से है जिसके अन्तर्गत सन्देश का सम्प्रेषण बिना शब्दों को बोले किया जाता है इसके अन्तर्गत सन्देश के सम्प्रेषण के लिए मुख्यतः हाव-भाव शारीरिक, भाषा नेत्र सम्पर्क, आदि का उपयोग किया जाता है

* संचार के तत्व =>

संचार के तत्व प्रमुख निम्न प्रकार है

DATE PAGE (3)

i) सन्देश भेजने वाला / प्रेषक ⇒
वह व्यक्ति जो किसी सूचना या सन्देश को पहुँचाता है प्रेषक कहलाता है

ii) सन्देश ⇒
यह किसी भी संचार का मुख्य विषय होता है जिसमें कोई भी सूचना लिखित या अलिखित किसी भी माध्यम से सम्प्रेषित की जा सकती है

iii) फीडबैक ⇒
सन्देश प्राप्तकर्ता अथवा रिसीवर की प्रतिक्रिया या उसका उत्तर ही फीडबैक कहलाता है जब तक प्राप्तकर्ता से सन्देश की प्रतिक्रिया नहीं प्राप्त होती है तब तक संचार प्रक्रिया को अपूर्ण माना जाता है

iv) प्राप्तकर्ता ⇒
वह व्यक्ति जो संदेश प्राप्त करता है प्राप्तकर्ता कहलाता है

* प्रभावशाली संचार ⇒
प्रभावशाली संचार का तात्पर्य ऐसे स्वरूप से है जो दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य बेहतर सम्बन्धों को निर्मित करने तथा उन्हें बनाए रखने में सहायक होता है

* प्रभावशाली संचार के सिद्धान्त निम्न हैं

i) साधारण एवं सरल भाषा ⇒
प्रेषक द्वारा सन्देश में साधारण एवं सरल भाषा का प्रयोग होना चाहिए

तथा तकनीकी और कठिन भाषाओं के प्रयोग से बचना चाहिए।

ii) व्यवस्थित संदेशवाहन ⇒

संदेशवाहन का समय, विषय वस्तु, स्थान उद्देश्य, सन्देश प्राप्तकर्ता सभी पहले से सुनिश्चित होने चाहिए।

iii) प्रेषक की सुनने मे दक्षता ⇒

सन्देश को सफलतापूर्वक तभी पहुंचाया जा सकता है जब प्रेषक सुनने में भी दक्ष हो। यदि प्रेषक सुनने में सक्षम नहीं है तो सन्देश को ठीक प्रकार से नहीं पहुंचाया जा सकता।

chapter-2 प्रदूषण (Pollution)

* प्रदूषण =>
प्राकृतिक पर्यावरण में अवांछित व अनावश्यक बाधा पदार्थों का समावेश जो पर्यावरण के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक अभिलक्षणों में परिवर्तन उत्पन्न कर देता है प्रदूषण कहलाता है
पर्यावरण प्रदूषण को निम्न भागों में विभाजित करता है

1) वायु प्रदूषण =>
जब मानव अथवा प्राकृतिक कारणों से गैसों की निश्चित मात्रा एवं अनुपात में परिवर्तित हो जाता है वायु में इन गैसों को कुछ अन्य अवांछित पदार्थ मिल जाते हैं उसे वायु प्रदूषण कहते हैं
वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए दो प्रकार हैं

i. प्रथम नियम =>
वर्तमान में हो चुके वायु प्रदूषण को नियंत्रित किया जाएगा जिससे उसका नियंत्रण या न करे

ii) द्वितीय =>
इस प्रकार के उपाय जिससे वायु प्रदूषण को पहले से ही नियन्त्रण किया जाए।

i) सही ईंधन का चुनाव करना जैसे- कच्चे ईंधन की जगह अधिक ज्वलनशील ईंधन का उपयोग करना
ii) उद्योगिक तरीकों से परिवर्तन करना या ऐसे यंत्रों का प्रयोग करना।
iii) प्रदूषणों को कम करने या उसको पूरी तरह समाप्त करने का तरीका प्रदूषणों का प्रचलित तरीका या ताप उत्प्रेरक दहन इनके

Scanned with AltaScanner

प्रदूषण कम हो जाते हैं

(ii) जल प्रदूषण ⇒ मानव पर प्रभाव ⇒

(i) पारा

(ii) कई जैसी धातुएं मछलियों समुद्री जीवों के द्वारा मानव में प्रवेश कर जाते हैं जिससे मानव खाद्य शृंखला प्रभावित करते हैं

(ii) प्रदूषित जल के सेवन से सांस की बीमारी लम्बी जीविका आदि का खतरा है

(iii) प्रदूषित समुद्र में स्नान करने से चर्म रोग जैसे दाद खाज, खुजली आदि

(iv) मछुआरों की आजीविका तथा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है

* जल प्रदूषण के नियंत्रण ⇒

(i) तेलीय ⇒

तेलीय प्रदूषण को शीघ्र एकत्रित करके जलाकर तथा अवशोषित करके समुद्री पानी के बाहर निकलना चाहिए

(ii) विषैले पदार्थों के जल विसर्जन पर अंकुश लगाकर रोक जानी चाहिए

(iii) प्राकृतिक रूप से विशेष निस्यंदक या वाष्प आदि रूप से प्रदूषण को कम करने चाहिए

(3) मृदा प्रदूषण ⇒

भूमि के भौतिक व रासायनिक या जैविक गुणों में ऐसे अवांछनीय परिवर्तन

जिसका प्रभाव मनुष्य एवं अन्य जीवो पर पड़े यदि भूमि प्राकृतिक गुणवत्ता या उपयोगिता नष्ट हो मृदा प्रदूषण कहलाता है।

- मानवीय मृदा प्रदूषण तीन प्रकार के होते है।

(i) कृषि विकास तथा अन्य क्रिया कलापो से
(ii) खनिज तथा वन का उत्खनन करने से
(iii) भूमि के अन्दर पदार्थो को डालकर अपशिष्ट किया जाने से

* कृषि प्रणाली के अपशिष्ट ⇒

कृषि के उपरान्त बचा हुआ भूसा चारा फसल पत्तियाँ आदि एक स्थान पर एकत्रित कर दिया जाता है या फैला रहता है इन पर पानी गिरने से सड़ता रहता है तथा जैविक क्रिया के होने से यह प्रदूषण का कार्य बन जाता है अकार्बनिक उर्वरक कार्बनिक तथा कीटनाशक अवशेष मृदा के रासायनिक गुणों में बदला देते है तथा भूमि के जीवो पर विपरीत प्रभाव पड़ते है।

खनन ⇒

एक प्रक्रिया जहाँ धरती की सतह को खोदकर भूमिगत जमा पदार्थ को निकाला जाता है इससे भूमि के ऊपरी भाग का बुरी तरह नुकसान होता है।

औद्योगिक अपशिष्ट ⇒

औद्योगिक अपशिष्ट जलनशील अपशिष्ट मेडिकल एवं अस्पतालों में अपशिष्ट के फेंकने से भूमि प्रदूषण होता है।

नगरीय अपशिष्ट ⇒ इस अन्तर्गत घरेलू तथा सफाई के अन्तर्गत बाजार के अन्तर्गत अस्पतालों के अपशिष्ट पशुओं के अपशिष्ट कसाई खानों के अपशिष्ट।

* ध्वनि प्रदूषण ⇒ ध्वनि का सम्पालक माध्यम है अगर ध्वनि न हो तो हमारा दैनिक जीवन असम्भव हो जायगा परन्तु यदि ध्वनि हमें परेशानी करे व हानिकारक हो जाए तो उसे शोर कहा जाता है। परिभाषा के अनुसार ध्वनि प्रदूषण ध्वनि ऐसे अवांछनीय तथा अनावश्यक ऐसे स्वर होते हैं जिनसे हमें परेशानी होती है जिनसे श्रवण क्षमता को नुकसान पहुंचता है।

ध्वनि प्रदूषण के प्रकार ⇒ (i) उप नगरीय प्रदूषण
(ii) ग्रामीण ध्वनि प्रदूषण (iii) औद्योगिक ध्वनि प्रदूषण
(iv) खनिज कोयला की खानों के ध्वनि प्रदूषण

- मनुष्य की सुनने की क्षमता २० DB (डेसीबल) से २०,००० DB के बीच होती है।

- शांत क्षेत्र में दिन में ध्वनि ५० DB रात में ४० DB
  औद्योगिक क्षेत्र के दिन की ध्वनि ७० DB रात में ७० DB

DATE
PAGE

ध्वनि स्तर का मापन ⇒

ध्वनि की सामान्य मापन इकाई डेसीबल (DB है) वास्तव में DB में ध्वनि की तीव्रता को मापता है वास्तविक में ध्वनि दाब की मापन इकाई माइक्रो प्रेशर या बाधित ध्वनि दाब है

(1) मनुष्य द्वारा उत्पन्न शोर औद्योगिक मशीनों यातायात वाहनों ध्वनि प्रवर्तक यथा औद्योगिक या व्यापारिक स्थलों पर धार्मिक व सामाजिक समारोह इत्यादि से ध्वनि प्रदूषण होता है

* ध्वनि प्रदूषण दुष्परिणाम ⇒

अत्यधिक शोर या ध्वनि प्रदूषण का हानिकारक प्रभाव कानों पर पड़ता है और उनके की स्थायी तथा अस्थायी रूप से प्रभावित होती है श्रवण शक्ति आम तौर पर बाधक आ जाती है 80DB से कम की ध्वनियां से बहरा नहीं होता क्योंकि 80 से 130 DB के प्रभाव से लगभग 50% मनुष्य अस्थायी बहरा के उन्मुख होते हैं 150 DB से या इससे अधिक की ध्वनि मनुष्य के कान को फाड़ देती है

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव ⇒

शोर के कारण चिंता तनाव जैसे खतरनाक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पैदा होते हैं ध्यान करने की असमर्थता और मानसिक शोर के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव हैं

ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण ⇒

ध्वनि प्रदूषण को 4 उपायों से नियंत्रण किया जाता है

(i) स्रोत पर शोर मे कमी करके
(ii) शोर के रास्तो को बंद करके)
(iii) रास्ते की लम्बाई बढ़ा देते है
(iv) ध्वनि अवशोषित पेड लगाकर

वायु प्रदूषण ⇒

वायु प्रदूषण का अर्थ वायु मे अवांछित ठोस या गैस की इतनी बड़ी मात्रा से है जो मानव की स्वास्थ्य पर्यावरण के हानिकारक होते है
जैसे- धूल के कण CO_2, NO_2 CO, N, etc

(i) कार्बनमोनो ऑक्साइड ⇒

कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसे ईंधन कोयला, पेट्रोल डीजल ईंधन इत्यादि पूर्ण रूप से नहीं जलने पर CO का निर्माण होता CO का लगातार SO/ उत्सर्जन मोटर वाहन से निकलता है CO श्वास के साथ अंदर जाने पर रक्त की में ऑक्सीजन लेने की क्षमता को कम करता है

(ii) SO_2 ⇒

सल्फर युक्त कोयला जलाने पर प्रमुख उत्सर्जन का कार्य करता है अपशिष्ट प्रगलक तथा तेल शोधक से SO_2 का उत्सर्जन होता है

(iii) CO_2 कार्बनडाई ऑक्साइड ⇒

एक गैस है जो जीव जगत के जीवन में अत्यधिक आवश्यक है हरे पौधे CO_2 की उपस्थिति प्रकाश संश्लेषण की क्रिया के द्वारा अपना भोजन बनाते है